CENTRAL JAIL KOTA
News Letter

पत्रांक 06 | कोरोना/ऑपरेशन फ्लश आउट विशेषांक | जून 2021

राजीव दासोत, IPS
महानिदेशक
कारागार राजस्थान, जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि केन्द्रीय कारागृह, कोटा अपने 'न्यूज लैटर' का नवीन 6th संस्करण प्रकाशित कर रहा है। महानिदेशक कारागार, राजस्थान के पद पर मेरे सेवाकाल में मैंने महसूस किया कि कारागृह में निरुद्ध कैदियों में रचनात्मक अभिरूचि वाले बंदी भी हैं जिनकी अभिव्यक्ति को मूर्त रूप देकर प्रकाशित करने में 'न्यूज लैटर' कोटा की विशिष्ट भूमिका रही है। कारागृह में होने वाले विभिन्न सुधारात्मक कार्यों, उद्योग उत्पादों आदि को जन मानस तक पहुँचाने में 'न्यूज लैटर' एक माध्यम बना है।

'ऑपरेशन फ्लश आउट' संपूर्ण प्रदेश की 144 जेलो में निषिद्ध सामग्री के प्रयोग तथा जेलो में अपराधिक गतिविधियों के संचालन पर अंकुश लगाने में एक **'गेम चैंजर'** के रूप में सिद्ध हुआ है। 'न्यूज लैटर' में इस विषय पर और अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार कोविड–19 के प्रबंधन में जेल विभाग ने उत्कृष्ट कार्य किया है–टेस्टिंग, ट्रेकिंग, ट्रीटमेंट व वैक्सीनेशन की दिशा में अधिकाधिक कार्य कर प्रदेश की जेलो को कोविड–मुक्त बनाया है। इस उपलब्धि को भी विस्तार में प्रकाशित किए जाने की आवश्यकता है।

मैं **'न्यूज लैटर'** के इस प्रकाशन पर अधीक्षक, केन्द्रीय कारागृह, कोटा श्रीमती सुमन मालीवाल तथा उनकी टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सद्भावी,

(राजीव दासोत)

केन्द्रीय कारागृह कोटा में जारी रहेगा ऑपरेशन फ्लश आउट, आदतन अपराधियों पर लग रहा अंकुश

श्री राजीव दासोत (IPS) महानिदेशक कारागार के निर्देशानुसार राजस्थान की समस्त कारागृहों में **''ऑपरेशन फ्लश आउट''** चलाया जा रहा है। इस अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए विस्तृत रूपरेखायें तैयार की गई। बंदियों को समय–समय पर जेलवाणी के माध्यम से अवगत करवाया गया। हार्डकोर बंदियों का अन्यत्र दूरस्थ जेलों में स्थानान्तरण किया गया ताकि इन्हें कम्फर्ट जोन से बाहर निकालकर इनके द्वारा चलाई जा रही अवांछनीय गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके। उक्त सभी प्रयासों के फलस्वरूप जेलों में विभिन्न अवांछनीय, अनावश्यक, अनाधिकृत एवं अवैधानिक सामग्री तथा सुविधाएं उपलब्ध कराने की प्रवृत्तियों पर रोक लगी है। ऑपरेशन लश आउट अभियान के अन्तर्गत विशेष सघन तलाशी अभियानों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कारागार विभाग द्वारा कारागृह अधीक्षक सुमन मालीवाल सहित 03 अन्य अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। केन्द्रीय कारागृह कोटा तथा कोटा मण्डल के अधीनस्थ समस्त कारागृहो के अधिकारी एवं कर्मचारीगण रात–दिन कड़ी मेहनत करके ऑपरेशन लश आउट को सफल बनाने का प्रयास कर रहे है। महानिदेशक कारागार राजस्थान द्वारा राज्य की जेलों में अवांछनीय, निषिद्ध वस्तुओं जैसे मोबाईल, मादक पदार्थ आदि की तस्करी या उपलब्धता तथा जेल से संचालित होने वाली आपराधिक गतिविधियों के विरूद्ध चलाए जा रहे **''ऑपरेशन फ्लश आउट''** की सफलता को देखते हुए इसे निरन्तर चलाया जा रहा है।

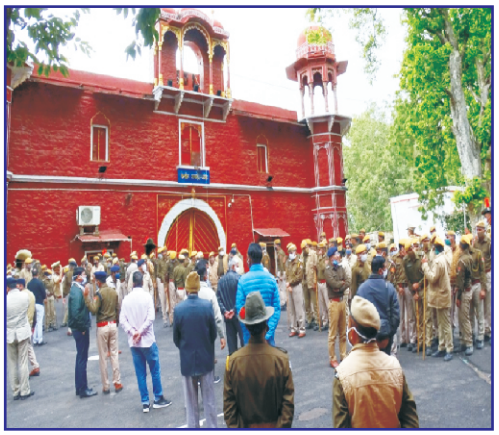

केन्द्रीय कारागृह कोटा में चला कोटा जिला प्रशासन का आकस्मिक सर्च अभियान
02 बार ली गई आकस्मिक तलाशी में नहीं मिली कोई निषिद्ध सामग्री

श्री राजीव दासोत (IPS) महानिदेशक कारागार राजस्थान के निर्देशन, मार्ग दर्शन एवं प्रतिदिन की मॉनिटरिंग से ऑपरेशन फ्लश आउट के तहत दिनांक 09.01.2021 एवं 22.04.2021 को केन्द्रीय कारागृह कोटा की आकस्मिक व सघन तलाशी पुलिस एवं जिला प्रशासन द्वारा करवाई गई। कोटा शहर के आला पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी श्री राजेश मील, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटा शहर, श्री प्रवीण जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, श्री प्रवीण आई.पी.एस. (प्रशिक्षु), श्री दीपक मित्तल, उपखण्ड अधिकारी कोटा, श्री अंकित जैन (आर.पी.एस.), श्री मुकुट (आर.पी.एस.), श्री मृत्यून्जय (आर.पी.एस.), श्री राजेन्द्र (आर.पी.एस.), श्री शंकर (आर.पी.एस.), श्री सुशील पुनिया कम्पनी कमाण्डर आर.ए.सी. सहित शहर के कई पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों की निगरानी में यह तलाशी करवाई गई, जिसमें में शहर पुलिस तथा आर.ए.सी. के 150 से ज्यादा जवानों द्वारा केन्द्रीय कारागृह कोटा के बंदियों, बंदीयान बैरक, उनके सामानों व खुले परिसर सहित जेल के चप्पे–चप्पे की लगभग 2 घंटे तक सघन तलाशी ली गई। तलाशी में आधुनिक उपकरणों यथा एन. एल.जे.डी. व एच.एच.एम.डी मशीन का प्रयोग किया गया। जेल अधीक्षक सहित श्री राजेश मील, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटा शहर ने कारागृह की मेनवॉल, छत, ड्यूटी पॉइंट्स आदि संवेदनशील सुरक्षा बिन्दुओं का भी दौरा किया। कारागृह में किसी प्रकार की निषिद्ध सामग्री नहीं होने पर शहर के उपस्थित आला अधिकारियों नें कोटा जेल प्रशासन के प्रबंधन की प्रशंसा की।

जिला कलक्टर ने किया केन्द्रीय कारागृह कोटा का औचक निरीक्षण

श्री उज्जवल राठौड़ (आई.ए.एस.) जिला कलक्टर कोटा ने दिनांक 08.02.2021 को केन्द्रीय कारागृह कोटा का निरीक्षण किया। उन्होंने कारागृह के वार्डो सहित बंदीयान भोजनशाला, कारागृह अस्पताल, कारागृह विद्यालय, कम्प्यूटर लैब, उद्योगशाला, जेलवाणी, बंदी मुलाकात कक्ष का अवलोकन किया। श्री राठौड़ ने बंदीयान भोजनशाला में बंदियों के लिये बने भोजन का स्वाद चखा। जिला कलक्टर ने केन्द्रीय कारागृह कोटा प्रशासन द्वारा बंदी कल्याण एवं कारागृह से बाहर जाने के पश्चात् समाज की मुख्यधारा से जोडने हेतु रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की दिशा में किये जा रहे जेल प्रशासन के अभूतपूर्व प्रयासों एवं बंदी सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों की सराहना की।

कोटा जेल के अथक प्रयासों से महिला बंदी की दुनिया हुई रोशन
रोशनी की आस खो चुकी महिला बंदी की आँखों का हुआ सफल ऑपरेशन

केन्द्रीय कारागृह कोटा के अधीनस्थ महिला बंदी सुधारगृह कोटा में वर्ष 2006 से निरूद्ध महिला बंदी कैलाशी बाई का कारागृह प्रशासन के अथक प्रयासों से मोतियाबिन्द का सफल ऑपरेशन करवाया गया जिससे उसके आंखों की रोशनी पुनः लौट आई है। आजीवन कारावास से दण्डित एवं कई वर्षों से अंधकार का जीवन जी रही कैलाशी बाई के सफल ऑपरेशन के बाद उसकी आखें पुनः इस दुनिया के खूबसूरत नजारों को देख रही है। 65 वर्ष की उम्रदराज कैलाशी बाई की आंखों की रोशनी चले जाने के कारण वह अवसादग्रस्त हो गई थी और अपनी आंखों के इलाज हेतु मानसिक रूप से तैयार नहीं हो पा रही थी। कारागृह द्वारा पूर्व में तीन बार ऑपरेशन हेतु अस्पताल भिजवाया गया किन्तु वह किसी भी सूरत में ऑपरेशन के लिए राजी नहीं हो पा रही थी।

जेल प्रशासन ने महिला बंदी कैलाशी बाई के इस दर्द को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और महिला बंदी सुधारगृह की मुख्य प्रहरी कमलेश कुमारी, जिसकी आवाज से कैलाशी बाई परिचित थी, से लगातार समन्वय स्थापित कर कैलाशी बाई को आंखों के ऑपरेशन के लिये तैयार किया। इस दौरान कई बार जेल अधीक्षक ने स्वयं भी कैलाशी बाई की काउन्सलिंग की और खूबसूरत दुनिया के सपने दिखाकर उसे ऑपरेशन के लिये तैयार किया। जेल में विगत 14 वर्षों से कैलाशी बाई जहां अपने छोटे से छोटे कार्य के लिये दूसरों पर आश्रित थी और अन्य बंदी एवं महिला कर्मचारी उसके सभी कार्यो में सहायता करते थे, वहीं अब वह खुद अपना काम कर पा रही है और उन सभी लोगो को देख रही है जिनकी उसने कभी सिर्फ आवाज भर सुनी थी। महिला बंदी कैलाशी बाई, मुख्य प्रहरी कमलेश कुमारी एवं जेल प्रशासन की सराहना करते नहीं थक रही है। जेल अधीक्षक की अनुशंषा पर मुख्य प्रहरी कमलेश कुमारी व प्रभाराधिकारी विनिता सक्सैना के मानवीयतापूर्ण दृष्टिकोण के साथ इस नेक कार्य को अंजाम देने के लिये महानिदेशक राजस्थान कारागार ने प्रशंसा–पत्र प्रदान किया।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश, कोटा ने किया कारागृह कोटा एवं महिला बंदी सुधारगृह का निरीक्षण
कोरोनाकाल में कारागृह के प्रबंधन को देखकर प्रभावित हुए जिला जज

केन्द्रीय कारागृह कोटा एवं महिला बंदी सुधारगृह कोटा का गुरूवार 06, मई को श्री मदन गोपाल व्यास, जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोटा ने अतिरिक्त जिला न्यायाधीश श्री महेश पुनेठा, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोटा श्रीमती अणिमा दाधीच एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती लतिका पाराशर के साथ निरीक्षण किया। उन्होंने क्वारेंटाइन वार्ड एवं आइसोलेशन वार्डो की गतिविधियों की भी जानकारी जेल चिकित्सा अधिकारी से प्राप्त की। उन्होने कोरोना महामारी की दूसरी लहर से बंदियों एवं कर्मचारियों के बचाव के लिये कोटा जेल प्रशासन की ओर से किये गए इन्तज़ामात को बेहतर बताते हुए कोटा जेल प्रशासन को बंदियों के बचाये रखने के लिए साधुवाद दिया।

कोविड वैक्सीनेशन की प्रथम डोज के शत–प्रतिशत के लक्ष्य की प्राप्ति

राज्य में बंदी संख्या के मामले में केन्द्रीय कारागृह कोटा सर्वाधिक बंदी संख्या वाली कारागृह है। केन्द्रीय कारागृह, कोटा के बंदियों को शत–प्रतिशत कोविड–19 वैक्सिनेशन की प्रथम डोज पूर्ण करवाई जा चुकी है। दिनांक 09 जून तक विभिन्न चरणों में आयोजित कोविड–19 वैक्सिनेशन शिविरों में केन्द्रीय कारागृह, कोटा के कुल 1438 बंदियों, महिला बंदी सुधारगृह कोटा की सम्पूर्ण महिलाओं तथा खुला बंदी शिविर कोटा में रह रहे सम्पूर्ण बंदियों को कोरोना वैक्सीन की प्रथम डोज़ तथा 45 वर्ष से अधिक आयु के 81 बंदियों को वैक्सीन की दूसरी डोज़ लगवाई गई।

श्री राजीव दासोत (IPS) महानिदेशक कारागार राजस्थान एवं श्रीमती मालिनी अग्रवाल (IPS) अतिरिक्त महानिदेशक कारागार राजस्थान की प्रेरणास्वरूप कोटा कारागृह ने जिला कलक्टर श्री उज्ज्वल राठौर के निर्देशन में सीएमएचओ कोटा डॉ0 भूपेन्द्र सिंह तंवर, आरसीएमओ डॉ0 रमेश एवं डॉ0 जालानी का सहयोग लेकर इस अभियान को मूर्त–रूप दिया।

मालिनी अग्रवाल, IPS
अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, कारागार राजस्थान, जयपुर

केन्द्रीय कारागृह, कोटा में वर्तमान में संचालित विविध गतिविधियों यथा योग, साक्षरता, उच्च शिक्षा, बंदी ऑर्केस्ट्रा बैण्ड, उद्योगशाला में उत्पादित दीपक, मास्क, स्कूल यूनिफार्म, होम केयर प्रोडक्ट आदि को जन भावना तक पहुँचाने में 'न्यूज लैटर' ने अभूत पूर्व योगदान दिया है। इनसे कैदियों की मौलिक अभिव्यक्ति को नया आयाम प्रदान किया है। वैश्विक महामारी कोविड–19 के संक्रमण के चलते राज्य की कारागृहों में निरूद्ध बंदियों के हित में जेल प्रशासन द्वारा उनके स्वास्थ्य लाभ एवं संक्रमण को रोकने के प्रशंसनीय प्रयास किये गए है तथा आगे भी यह प्रक्रिया जारी रहेगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं **'न्यूज लैटर'** के पत्रांक 6 के प्रकाशन के लिए शुभकामनाऐं प्रेषित करती हूँ।

रवि दत्त गौड़, IPS
महानिरीक्षक पुलिस, रेन्ज, कोटा

केन्द्रीय कारागृह, कोटा से प्रकाशित किए जाने वाले 'न्यूज लैटर' के कुछ संस्करण मेरे द्वारा पढ़े गए। कैदियों द्वारा रचित कविताओं, निबंध, कहानियों को प्रकाशित कर समाज तक उनकी सकारात्मक सोच को पहुँचाने में जहॉ एक ओर ये 'न्यूज लैटर' सशक्त माध्यम बना है वहीं केन्द्रीय कारागृह कोटा द्वारा किए गए बंदी शिक्षा, रोजगार के प्रयासों व सफलताओं के प्रकाशन से कारागृह की छवि 'सुधारगृह' के रूप में उभरी है।

मैं **'न्यूज लैटर'** के प्रकाशन के इस अवसर पर अधीक्षक केन्द्रीय कारागृह, कोटा एवं उनकी टीम को शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

विक्रम सिंह
महानिरीक्षक
कारागार राजस्थान, जयपुर

प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय कारागृह कोटा अपने 'न्यूज लैटर' के माध्यम से कारागृह पर संचालित विविध गतिविधियों यथा बंदी उद्योग शाला उत्पादन, जेलों के स्वच्छता अभियान, खुला बंदी शिविर की गतिविधियां आदि प्रकाशित करता रहा है।

बंदियों के सकारात्मक व अति विशिष्ट कार्यो के लिए रेमीशन, समय पूर्व रिहाई तथा कोरोना की महामारी हेतु संक्रमण से बचाने के लिए किए गए इंतजामात का प्रकाशन बंदियों को अच्छे जेल आचरण के लिए प्रेरित करता है।

मैं **'न्यूज लैटर'** के इस पत्रांक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

केन्द्रीय कारागृह कोटा में आयोजित हुआ नेत्र जांच शिविर, जरुरतमंदों को मिले चश्मे पुलिस अधीक्षक कोटा ग्रामीण ने किया शिविर का शुभारम्भ

केन्द्रीय कारागृह कोटा एवं भारत विकास परिषद माधव शाखा के संयुक्त तत्वावधान में गुरूवार, 18 मार्च को बंदियों के लिये नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। श्री शरद चौधरी (IPS), पुलिस अधीक्षक कोटा ग्रामीण ने शिविर का उद्घाटन किया। नेत्र चिकित्सक डॉ0 नेहा जैन ने अपनी टीम के साथ 150 बंदियों सहित जेल व आरएसी कार्मिकों की आंखों की जांच की। 115 बंदियों के लिए निःशुल्क चश्मे भी उपलब्ध करवाये गए।

पुलिस अधीक्षक कोटा ग्रामीण ने कारागृह में संचालित जेलवाणी के माध्यम से बंदियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कारागृह प्रशासन द्वारा बंदियों को रोजगारपरक प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है, उन्हें चाहिए कि वे अधिक से अधिक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपराध के रास्ते को छोडे तथा आत्मनिर्भर बनकर अपना भविष्य संवारे। भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्याम शर्मा ने अपने उद्बोधन में बंदियों को मन, वचन व कर्म से शुद्ध रहते हुए संयमित आचरण व्यवहार में लाने तथा कोटा कारागृह प्रशासन द्वारा संचालित नवाचार कार्यक्रमों का अधिकाधिक लाभ लेने हेतु प्रेरित किया।

''आशाऐं'' कोटा जेल बैण्ड ऑर्केस्ट्रा के फनकार बंदियों की प्रस्तुति से मंत्रमुग्ध होकर श्रीमान पुलिस अधीक्षक ने मौके पर ही जेल बैण्ड आर्केस्ट्रा को पुलिस विभाग के कार्यक्रम हेतु बुक कर लिया।

पुलिस परिवार के कार्यक्रम की रौनक बना 'आशाऐं' बंदी बैण्ड आर्केस्ट्रा

श्री शरद चौधरी (IPS) पुलिस अधीक्षक कोटा ग्रामीण अपने कोटा जेल विजिट के दौरान 'आशाऐं' बंदी बैण्ड आर्केस्ट्रा के बंदी फनकारों की कला को देखकर इतने प्रभावित हुऐ कि उन्होनें मौके पर ही इस आर्केस्ट्रा बैण्ड को पुलिस लाईन ग्रामीण कोटा मे कार्यक्रम के लिए बुक कर लिया। 05 अप्रेल 2021 को पुलिस लाईन कोटा ग्रामीण में पुलिसकर्मियों के मनोरंजन हेतु 'संगीत सवेरा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 'आशाऐं' कोटा जेल बैण्ड आर्केस्ट्रा द्वारा अपनी आकर्षक प्रस्तुतियां दी गई। कोटा जेल के बंदियों के संगीत हुनर का करिश्मा देखने के लिये कार्यक्रम में कोटा शहर के कई गणमान्य उपस्थित रहे। बंदी कलाकार अकरम, भूरालाल एवं जाहिद हुसैन ने कार्यक्रम में अपने सुरों का जादू बिखेर कर श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। श्री पारस जैन (ASP) अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटा ग्रामीण ने भी 'आशाऐं' बंदी बैण्ड आर्केस्ट्रा के बंदी फनकारों के साथ जुगलबंदी कर सुर से सुर मिलाया। कार्यक्रम में उपस्थित बॉलीवुड के प्रसिद्ध कलाकार निषेध ने भी बंदियों की प्रस्तुतियों को मंत्रमुग्ध होकर सुना और उनके फन की सराहना करने के साथ–साथ कोटा कारागृह के बंदियों को उचित वातावरण उपलब्ध करवाकर उन्हें संगीत जैसा हुनर सिखाने के लिए कोटा जेल प्रशासन की जमकर तारीफ की।

राजस्थान दिवस के अवसर पर बंदियों की हुई समय पूर्व रिहाई, बंदियों के जीवन में छाई खुशियों की बहार संभागीय आयुक्त ने पुस्तकें भेंट कर किया बंदियों को विदा

राजस्थान सरकार एवं महानिदेशालय कारागार राजस्थान के निर्देशानुसार बंदियों को समयपूर्व रिहाई के रूप में राजस्थान दिवस का अनूठा तोहफा मिला है जो सभी के लिये प्रसन्नता का विषय है। कारागृह कोटा के बंदियों के जीवन में भी 30 मार्च **''राजस्थान दिवस''** नई सौगात लेकर आया। कोटा कारागृह व खुला बंदी शिविर में रह रहे 86 बंदियों को निर्धारित पात्रता पूर्ण करने स्थाई पैरोल पर रिहा किया गया। श्री कैलाश चन्द मीणा (IAS) संभागीय आयुक्त कोटा संभाग ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत की। राजस्थान सरकार के निर्णय से अचानक इतनी बडी खुशी पाकर बंदी तथा उनके परिजन फूले नहीं समा रहे थे। अपनों की समय पूर्व रिहाई की खबर पाकर परिजनों की खुशियों का भी ठिकाना नहीं था। समय पूर्व रिहा होने वाले बंदियों को संभागीय आयुक्त द्वारा श्रीमद् भगवद् गीता पुस्तकें भेंटकर विदा किया गया वहीं बंदियों ने भी भविष्य में कभी भी अपराध नहीं करने तथा जेल में प्राप्त किये रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षणों द्वारा स्वयं का रोजगार प्रारम्भ कर स्वावलम्बी बनने का भी संकल्प लिया।

केन्द्रीय कारागृह कोटा ने झांकी में दिखाई जेल में बंदी सुधार की झलक, जीवन्त झांकी को मिला प्रथम पुरस्कार, बंदी हुए उत्साहित

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2021 के अवसर पर महाराव भीमसिंह स्टेडियम, कोटा में संभाग स्तरीय समारोह के दौरान केन्द्रीय कारागृह कोटा के इतिहास में प्रथम बार पहल करते हुए जेल की जीवन्त झांकी का प्रदर्शन किया गया, जिसमें बंदी सुधार संबंधी नवाचारों, बंदियों द्वारा किये जा रहे सकारात्मक कार्यों, जेल की व्यवस्थाओं में सुधारों को प्रदर्शित किया गया। केन्द्रीय कारागृह में संचालित नवाचारों यथा जेलवाणी, ''**आशाऐं**'' कोटा जेल बैण्ड ऑर्केस्ट्रा, प्रिजनर इनमेट कॉलिंग सिस्टम, केरला आयुर्वेदिक एवं पंचकर्मा प्रशिक्षण, पुस्तकालय, दीपक उद्योग, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, मसाला उद्योग सहित तमाम कार्यक्रमों की जीवन्त झलकी दिखाई गई वहीं बंदी बैरिक सहित उनकी क्रिया–कलापों को प्रदर्शित किया गया। इसे खुला बंदी शिविर में रह रहे बंदियों द्वारा जीवन्त रूप से प्रस्तुत किया गया। संभाग की सभी झांकियों में कारागृह की झांकी सर्वश्रेष्ठ रही जिसने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। जेल प्रशासन के प्रयासों से जेल में किए जा रहे सुधारों को निर्णायकों ने भी सराहा वहीं महानिदेशक राजस्थान कारागार श्री राजीव दासोत (IPS), अतिरिक्त महानिदेशक श्रीमती मालिनी अग्रवाल (IPS) द्वारा भी सराहना की गई।

कोटा मण्डल को मिलेगी नई जेल की सौगात उपमहानिरीक्षक कारागार, उदयपुर रेंज ने प्रस्तावित भूमि का किया अवलोकन

श्री कैलाश त्रिवेदी, उपमहानिरीक्षक कारागार रेंज, उदयपुर ने दिनांक 03.02.2021 को केन्द्रीय कारागृह कोटा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने केन्द्रीय कारागृह कोटा की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया वहीं उन्होने कारागृह में बंदी कल्याण की दिशा में किये जा रहे नवाचारों एवं उद्योगशाला में बंदियों द्वारा तैयार किये जा रहे उत्पादों की भी जानकारी ली। कारागृह पाठशाला में पढ़कर निरक्षर से साक्षर हुए बंदियों से रूबरू हुए तथा साक्षरता की दिशा में किये जा रहे कोटा कारागृह प्रशासन के अभूतपूर्व प्रयासों की सराहना की। बंदियान लंगर में उन्होनें बंदियों के लिए बनाये गये भोजन का अवलोकन किया एवं उसकी तारीफ की। अल्पसमय में ही बंदियों द्वारा जेल में रहते हुए संगीत का हुनर सीखकर अपनी प्रस्तुतियां शहर के कई आयोजनों में देने पर 'आशाऐं' कोटा जेल बैण्ड के कलाकारों को बधाई दी। कारागृह कोटा के निरीक्षण के पश्चात् उन्होनें केन्द्रीय कारागृह कोटा हेतु शम्भुपूरा बाईपास पर प्रस्तावित नई जेल के लिए भूमि का भी निरीक्षण किया।

''मेरी मां''

ठुकरा दे चाहे सारी दुनिया मुझको
वो मुझसे जुदा हो सकती नहीं,
यह सिर्फ मेरी मां ही है जो
मुझसे ख़फा हो सकती नहीं।

तपिश सूरज की खुद सह लेगी मगर
धूप मुझ पर कभी पडने देती नहीं,
तकलीफ सह लेगी जमाने भर की फिर भी
मुझे दिखाने के लिये कभी वो रोती नहीं।

इक निवाला भी चाहे खुद ना खाये
मुझे खिलाये बिना वह भी रहती नहीं,
खुद चाहे पानी भी ना पिये दिनभर
दूध पिलाये बिना वो कभी सोती नहीं।

ना होता निशां मेरा,शोहरत ये होती नहीं
इक बूंद लहू की मेरे जिस्म में होती नहीं,
मैं शायद कभी खुदा को जान नहीं पाता
मेरी मां अगर इस दुनिया में होती नहीं।

'संदीप अग्रवाल'
सज़ायाता बंदी, बैरिक नंबर 15

''हाँ... मैं नारी हूँ''

हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ

तोड़ के पिंजरा, जाने कब उड़ जाऊँगी मैं
लाख बिछा दो बंदिशें
फिर भी आसमां में जगह बनाऊँगी मैं
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ।

भले ही रूढिवादी जंजीरों से
बांधे हैं दुनिया ने पैर मेरे
फिर भी इसे तोड़ जाऊँगी मैं
मैं किसी से कम नहीं हूँ
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ।

ये सारी दुनिया को दिखाऊँगी
जो हालात से डरे
ऐसी नहीं मैं लाचारी हूँ
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ।

'नगमा'
विचाराधीन बंदी
महिला बंदी सुधारगृह, कोटा

महिला बंदी सुधार गृह में सादगी से मनाया गया ''अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस''
महिला बंदियों हेतु आयोजित हुई कई प्रतियोगिताएं, मिली साउण्ड सिस्टम की सौगात

केन्द्रीय कारागृह कोटा के अधीन महिला बंदी सुधारगृह में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस खास अंदाज में मनाया गया। कार्यक्रम में श्रीमती गीता पाठक, सिविल न्यायिक मजिस्ट्रेट, कोटा तथा विशिष्ट अतिथि डॉ0 विधि शर्मा, कोषाधिकारी कोटा ने भी शिरकत की। रोटरी क्लब ''पद्मिनी'' कोटा द्वारा महिला बंदियों के मनोरंजन के लिये साउण्ड सिस्टम भी भेंट किया गया। भारतीय दर्शन एवं संस्कृति सदैव ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' का अनुगामी रहा है। इसी विचारधारा का अनुसरण करते हुए कोटा कारागृह भी महिला बंदियों के उत्थान हेतु प्रयासरत है।

अचार, मुरब्बा, पापड़ मेकिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन, प्रमाण–पत्र पाकर खिले महिला बंदियों के चेहरे
सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, कोटा ने किया दौरा

सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोटा श्रीमती अणिमा दाधीच एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती लतिका पाराशर ने बुधवार 07 अप्रेल को केन्द्रीय कारागृह, कोटा एवं महिला बंदी सुधारगृह, कोटा का दौरा किया। महिला बंदी सुधारगृह, कोटा में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, कोटा द्वारा प्रायोजित एवं ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान सेन्ट आरसेटी, कोटा के तत्वावधान में महिला बंदियों के लिये अचार, मुरब्बा, पापड़ एवं मसाला उद्योग के 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित 23 महिला बंदियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र भी प्रदान किये गये, जो इन्हें स्वावलम्बी बनाने हेतु निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

ऐसा कभी हुआ नहीं...

हाथों ने दामन छोड़ा नहीं, आंखों की सगाई टूटी नहीं
बस वक़्त ने इतना रहम किया, जो दिल की पूंजी लूटी नहीं
धड़कनों ने तेरी जिस तरह, मेरी धड़कनों को छुआ है
एहसास पहले कभी ऐसा, इस दिल को कभी हुआ नहीं ।।

मिले हैं कुछ लम्हें हमें, जिनमें प्यार ही प्यार है
ना सोचूं तेरे बारे में, पल ऐसा कोई बीता नहीं
संजोयें हैं सपनें कई, महकता में रूआं–रूआं है
बीती हो शब कोई बिन तेरे, ऐसा कभी हुआ नहीं ।।

तुझे देखने भर के लिये, तेरी तस्वीरों को छुआ है
आंखें बंद करूं, गुम तू हो जाये, ये कभी सोचा नहीं
चाहता हूं मैं तुझे कितना, ये तो तुम्हें पता है
चाहती हो तुम मुझे कितना, तुमने मुझे बताया नहीं ।।

जब नाम हमारा लेते हो, क्यों आंखे छलकने लगती है
तुम झूठे हो, लब से मगर, आंखों की जुबां तो झूठी नहीं
कैद हूं मैं ''सागर'' तेरे , दिल के जेलखाने में
अब तू सज़ा दे या कर रिहा, दिल ने कभी सोचा नहीं ।।

'प्रियंक जीनगर'
विचाराधीन बंदी
बैरिक नंबर 15

''बेटियां''

खुशबू से भरा फूल हूँ मैं तो
सारे जहाँ को महकाती हूँ मैं
चाहता नहीं कोई फिर भी मुझे
कोख में ही मारी जाती हूँ मैं

पापा की परी हूँ मैं तो
सबका मन बहलाती हूँ मैं
क्यों नहीं चाहते बेटी फिर भी
कोख में ही मारी जाती हूँ मैं

भरती हूँ सबका पेट मैं तो
बनाकर खाना खिलाती हूँ मैं
सहती हूँ खुद भूख फिर भी
कोख में ही मारी जाती हूँ मैं

करती हूँ सबसे प्यार मैं तो
मां, बहन, बहू बन जाती हूँ मैं
जीवन देती हूँ मैं फिर भी
कोख में ही मारी जाती हूँ मैं.....

''अगर मार दोगे सब बेटियां, तो बेटा कहां से पाओगे
सूनी रहेगी कलाई तुम्हारी, ममता माँ की कहां से लाओगे''

'प्रदीप शर्मा'
सजायाता बंदी
बैरक नम्बर 18

''नो मास्क, नो एग्जिट''

केन्द्रीय कारागृह कोटा के कुशल प्रबंधन से जेल में पैर नहीं जमा पाया कोरोना

प्रवेश से लेकर रिहाई तक बंदी करते हैं कोविड नियमों का पालन

केन्द्रीय कारागृह कोटा प्रशासन द्वारा कोरोना की प्रथम लहर के समय से ही बरती गई सावधानियों एवं दिशा–निर्देशों का सख्ती से पालन करने से यहाँ कोरोना की पहली एवं दूसरी लहर का प्रकोप बंदियों पर हावी नहीं हो पाया। प्रारम्भिक दौर में बंदियों को कोविड नियमों की पालना कराने हेतु प्रशासन को अधिक बंदी संख्या होने के कारण खासी मशक्कत करनी पड़ी किन्तु अथक प्रयासों के बाद अब यह बंदियों की दिनचर्या बन गया और उन्हें सख्ती की आवश्यकता नहीं रही। श्री राजीव दासोत (IPS) महानिदेशक कारागार राजस्थान ने कारागृह में क्लीनिंग, सेनेटाइजेशन, आइसोलेशन एवं आब्जर्वेशन वार्ड की स्थापना, माकूल चिकित्सा सेवाएं समय पर उपलब्ध कराने और इम्युनिटी बढ़ाने हेतु व्यक्तिगत रूचि लेकर, बंदियों के स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण मानवीय दृष्टिकोण एवं कुशल नेतृत्व जेल विभाग को प्रदान करते हुए समयोचित सफल प्रयास किये। प्रबंधन की कुछ झलकियां निम्न हैं :

- नियमित रूप से सोडियम हाइपोक्लोराइट का छिड़काव कर बैरको को सैनेटाइज करना तथा बार बार हाथ धोने के लिये साबुन एवं सैनेटाइजर उपलब्ध कराना।
- बैरिकों, टॉयलेट्स, नालियों सहित खुले एरिया की भी साफ–सफाई का पूर्ण ध्यान रखना तथा नये बंदियों को प्रवेश के समय सैनेटाइजिंग प्रोसेस से गुजरना तथा बंदियों सहित सभी आगन्तुकों के लिए साबुन से हाथ धोना एवं सेनेटाइज करना।
- ''नो मास्क नो एंट्री'' का सख्ती से पालन, **''नो मास्क नो एंट्री''** की तर्ज पर **''नो मास्क नो एग्जिट''** लागू करते हुए बिना मास्क के बैरक से बाहर निकलने पर पाबंदी तथा सभी बंदियों को कोटा कारागृह प्रशासन द्वारा अपनी ही उद्योगशाला में बंदियों द्वारा निर्मित रीयूजेबल मास्क उपलब्ध करवाये गये।
- तलाशी लेने वाले कार्मिक को कोरोना प्रोटेक्शन किट पहनना तथा जेल दाखिल होने वाले बन्दियों की कांउसलिंग, स्क्रीनिंग के पश्चात् पुलिस द्वारा बंदी की RT-PCR नेगेटिव रिपोर्ट उपलब्ध करवाने पर ही बंदी को जेल में प्रवेश देना।
- चिकित्सों द्वारा स्क्रीनिंग की जाकर कुछ दिन आइसोलेशन वार्ड में रखकर पुनः स्क्रीनिंग कर ही उन्हें सामान्य वार्ड में शिट करना।
- विशेष रूप से प्रशिक्षित बंदियों द्वारा बंदियों को तनाव से मुक्ति प्रदान करने एवं इम्युनिटी बढाने हेतु नियमित योगाभ्यास यथा प्राणायाम, अनुलोम–विलोम जैसी यौगिक क्रियाएं बंदियों की दिनचर्या में समाहित करना।
- बंदियों को पौष्टिक भोजन व खाना पकाने से परोसने तक स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखना। बंदियों को पीने के लिये दिन में कई बार गर्म पानी उपलब्ध करवाना तथा चाय में लौंग, कालीमिर्च एवं तुलसी का प्रयोग, पीने के पानी में तुलसी अर्क का इस्तेमाल करवाना, बुजुर्ग एवं बीमार बंदियों कोएनजीओ के सहयोग से इम्यूनिटी बूस्टर च्यवनप्राश उपलब्ध करवाना।
- कोटा कारागृह में संचालित ''जेलवाणी'' के माध्यम से बंदियों को तनाव–मुक्ति हेतु मनपसंद गीतो का प्रसारण करना, बंदियों एवं जेल अधिकारियों के बीच संवाद कायम करना, बंदियों को जागरूक बनाने एवं उन्हें आवश्यक दिशा–निर्देश तत्काल पालनार्थ जारी करने के साथ–साथ विशिष्ट प्रबुद्ध अतिथिगणों तथा ''कोरोना से बंदियों के स्वास्थ्य की चिंता व रख–रखाव'' का भी संदेश प्रसारित किया गया।
- बंदियों की परिजनो से वीडियो कान्फ्रेंसिंग द्वारा नियमित मुलाकातें कराना ताकि फिजिकल मुलाकातें बंद होने के कारण बंदी अवसाद से ग्रसित ना हों।

उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय कारागृह कोटा में बंदी क्षमता से औसतन अधिक बंदी निरूद्ध रहने, स्थानाभाव एवं संसाधनों की कमी के कारण सोशल डिस्टेंसिंग की पूर्ण पालना सम्भव नहीं होने के बावजूद सतत् एवं सफल प्रयासो द्वारा कोटा केन्द्रीय कारागृह प्रशासन ने कोविड महामारी से जीत के नये आयाम स्थापित करने का प्रयास किया।

चाहिये बहुत कुछ .....''अच्छा''

कमोबेश हम सभी सामान्य इंसान की तरह ही पैदा होते हैं और पूरी जिन्दगी अच्छे के पीछे भागते रहते हैं, अच्छी पढ़ाई, अच्छे कपड़े, अच्छी नौकरी, अच्छा मकान और भी जो कुछ हमें इस जिदंगी से हासिल हो सकता है। आखिर यह अच्छा है क्या.... सिर्फ और सिर्फ हमारे अपनों से होड़ लगाने या यूं कहिये की अपनो को नीचा दिखाने की चाहत में उनसे ज्यादा और बेहतर प्राप्त करने की भाग–दौड़। जरा सोचिये इसके कारण हम कितना कुछ खो देते हैं, उस मां की गोद जिसमें हमने जिंदगी पाई, उस पिता का साया जहां हमारे पंखों को उड़ान मिली और उन दोस्तों का साथ जिन्होनें हमें सुख–दुःख में साथ देना सिखाया। इस अच्छे को पाने की चाहत में हम लोग किसी भी हद तक जाने और किसी का भी हक मारने से नहीं चूकते।

इस कोरोना के आपातकाल में दुनिया ने बहुत कुछ सीखा है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है इंसान का दुःख–दर्द साझा करना। और इंसान ही क्यों इस आपातकाल से तो कहीं ना कहीं पृथ्वी के सभी जीव प्रभावित हुए हैं। इस बुरे दौर में हमने अच्छी, बुरी या सामान्य जैसी भी परिस्थिति हो, उसमें जैसा भी मिले और जितना भी मिले, उसी में काम चलाना सीख लिया है और यही बात शायद हमें बहुत पहले सीख लेनी चाहिए थी। तब फिर जिन वस्तुओं का अभाव हमें आज अखरता है या जिन वस्तुओं के बिना हम जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते, उनमें से किसी भी वस्तु की कमी हमें नहीं होती। हमनें अच्छा पाने के लिये गांव छोड़ा, खेत और जंगल समाप्त कर दिये, नदियों का रास्ता रोक दिया और इससे भी हमारा मन नहीं भरा तो हमने पहाड़ों के सीने भी छलनी कर दिये। आसमां में तो हमने हमारा राज ही समझ लिया, इसी का परिणाम है कि आज हमें हमारी जीवनदायिनी ऑक्सीजन और शुद्ध पानी के लिये भी तरसना पड़ गया। इस आपातकाल ने कुछ लोगों को उनकी बुरी आदतें छोड़ने पर मजबूर कर दिया। इसका एक बड़ा कारण उन बुरी लतों के लिये जरूरी सामान और वातावरण जैसे नशे का सामान, जुए–सट्टे, शराबखाने का नहीं मिल पाना भी रहा। यह सब भी उन लोगो के लिये शायद अच्छे की श्रेणी में ही आता है, क्योंकि अपने इन व्यसनों की पूर्ति के लिए ये लोग किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। बेजुबान जानवर कोरोना में भयमुक्त थे और आपाधापी में लगा इंसान डरा हुआ, सहमा हुआ..... बस ईश्वर से प्रार्थना में लगा था कि ''हे ईश्वर ! बस इस बार बख्श दे.... इंसान बन कर दिखाऊंगा।''

शायद अब ये लोग इस कोरोना काल से सीख लेकर सामान्य जिदंगी बसर करना सीख जायें और हम भी अच्छे से अच्छा पाने की चाहत छोड़कर अपनों के बीच सामान्य और खुशहाल जीवन शुरू कर दें। तो सोचिये, क्या हमें सच में चाहिये.... .... बहुत कुछ.....''अच्छा''.....!

'अवधेश कुमार गुप्ता'
प्रहरी
केन्द्रीय कारागृह, कोटा

''शिक्षा नगरी'' कोटा की सेन्ट्रल जेल भी बन रही ''शिक्षित जेल''

अपराध के अंधेरे रास्तों पर शिक्षा के चिराग़ जला रहा केन्द्रीय कारागृह कोटा

अगर उचित मार्गदर्शन दिया जाये और सकारात्मक माहौल उपलब्ध करवाया जाये तो अक्षरों से डरने वाले लोग भी किताबों को अपना दोस्त बना लेते है, कामचोर भी व्यवसाय की ओर अग्रसर हो जाते हैं। कारागृह कोटा के ऐसे ही सकारात्मक परिवेश में बंदी अपराध के अंधेरे से निकलकर किताबों और उद्यमिता प्रशिक्षण को अपना दोस्त बना रहे है। जेल में आने से पूर्व जो बंदी अशिक्षा और नकारात्मक माहौल के कारण अपराध के शिकंजे में फंस गये थे, वही बंदी अब केन्द्रीय कारागृह कोटा के सकारात्मक और सुधारात्मक वातावरण मिलने से खुद को बदल रहे है। उद्यमिता एवं शिक्षा की राह में अपनी दुनिया तलाश रहे है।

जेल प्रवेश के समय निरक्षर बंदियों को प्रशिक्षित बंदियों द्वारा अक्षर–ज्ञान कराया जाता है। अब तक कारागृह पाठशाला में कुल 910 बंदियों को साक्षर किया जाकर बुनियादी शिक्षा प्रदान की गई जिसके फलस्वरूप अब वह अगूंठा लगाने की बजाय हस्ताक्षर कर रहे हैं एवं दैनिक कार्य जैसे अखबार, पुस्तकें आदि पढ़ने सहित छोटा–मोटा हिसाब भी कर लेते हैं वहीं सत्र जुलाई–2018 से ही केन्द्रीय कारागृह कोटा में इग्नू का विशेष अध्ययन केन्द्र भी नियमित रूप से संचालित है। तब से प्रत्येक सत्र में कोटा जेल में इग्नू के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले बंदियों में उत्तरोतर वृद्धि हुई और जुलाई 2018 से अब तक बीए, बीपीपी, सर्टिफिकेट इन डिजास्टर मैनेजमेंट (सीडीएम), सर्टिफिकेट इन फूड एण्ड न्यूट्रिशियन (सीएफएन) जैसे विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले बंदियों की संख्या 1030 हो गई है। जेल अधीक्षक व अन्य अधिकारियों द्वारा बंदियों की कक्षाऐं ली जाती है। कारागृह के ही उच्चशिक्षित बंदी संदीप व सुधीर द्वारा भी बंदियों की नियमित कक्षायें लेने के फलस्वरूप सभी बंदी पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रहे है। गत परीक्षाओं में यहां के बंदी–विद्यार्थियों ने अच्छे परिणाम दिये हैं। कारागृह पुस्तकालय को आकर्षक बनाकर वहां 3000 से अधिक धार्मिक, उपन्यास, कहानियां, महापुरूषों की जीवनियां आदि विभिन्न विषयों पर आधारित मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई हैं जिनका लाभ लेकर अधिकतम बंदी ज्ञानार्जन कर समय का समुचित सदुपयोग कर रहे हैं। कारागृह में स्थापित कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में अब तक 394 बंदियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिलवाया जा चुका है।

यहां बंदियों को किताबी शिक्षा तक ही सीमित नहीं रखते हुए विभिन्न उद्यमिता एवं व्यावसायिक रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण भी कारागृह की उद्योगशाला में प्रदान किये जा रहे है। समय–समय पर महिला एवं पुरूष बंदियों को आत्मनिर्भर बनने के गुर सिखाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे सिलाई प्रशिक्षण, बागवानी, हेयर कटिंग, होमकेयर प्रोडक्ट्स, दरी बुनाई, केरला आयुर्वेदिक एवं पंचकर्मा थैरेपी, अचार, मुरब्बा, कैण्डी एवं पापड मेकिंग प्रशिक्षण आदि आयोजित किये जाते रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक, कोटा (शहर) ने किया कारागृह का दौरा, कुटुम्ब संस्था एवं भारत विकास परिषद् के सयुंक्त तत्वावधान में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

25 मार्च 2021 को केन्द्रीय कारागृह कोटा में कुटुम्ब संस्था एवं भारत विकास परिषद् की रानी लक्ष्मीबाई शाखा के सयुंक्त तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री विकास पाठक (IPS), पुलिस अधीक्षक शहर कोटा एवं विशिष्ठ अतिथि श्रीमती विधि शर्मा, कोषाधिकारी कोष कार्यालय कोटा ने शिरकत की। पुलिस अधीक्षक महोदय ने बंदियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कारागृह में रोजगार संबंधी विभिन्न प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। बंदियों को अपराध के रास्ते को छोडकर आत्मनिर्भर बनकर अपना भविष्य संवारना चाहिये। कार्यक्रम में बंदियों को समाज में पुनर्स्थापित करने की दिशा में कोटा कारागृह प्रशासन सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। कुटुम्ब संस्था एवं भारत विकास परिषद् रानी लक्ष्मीबाई शाखा द्वारा बंदियान लंगर हेतु आवश्यक एवं उपयोगी बर्तन भेंट किये गए।

विचाराधीन बंदी की स्वच्छ भारत संकल्पना ने कारागृह को दिलाया सम्मान

बंदी की चित्रकारी को मिला जिला स्तरीय कार्यक्रम में पुरस्कार

नगर निगम कोटा द्वारा जिला स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता ''स्वच्छ भारत'' का आयोजन दिनांक 15 फरवरी 2021 को किया गया। सम्पूर्ण जिले से विभिन्न वर्गो के प्रतिभागियों ने ''स्वच्छ भारत'' विषय पर चित्र बनाकर प्रतियोगिता में भाग लिया। कारागृह कोटा के विचाराधीन बंदी चन्द्रकान्त पाठक ने भी पेंसिल से स्वच्छ भारत का संदेश देती कलाकृति को कागज पर उकेरा और बंदियों के स्वच्छता प्रेम को दर्शाती रचना भिजवाकर प्रतियोगिता में भाग लिया। बंदी चन्द्रकान्त पाठक की इस रचना ने पुरस्कार प्राप्त किया। बंदी के प्रतियोगिता कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सकने के कारण केन्द्रीय कारागृह कोटा के प्रहरी अवधेश गुप्ता ने उनकी ओर से पुरस्कार ग्रहण किया।

चन्द्रकान्त पाठक, विचाराधीन बंदी, बैरक नंबर 14